तृतीय अध्याय

" 'रातरानी' नाटक के पात्र "

तृतीय अध्याय

" 'रातरानी' नाटक के पात्र "

प्रस्तावना

नाटक साहित्य में "कथावस्तु" नाटक का प्राण है तो "पात्र तथा चरित्र-चित्रण" नाटक का प्राणभूत तत्त्व है । चरित्र-चित्रण नाटक का एक महत्त्वपूर्ण अंग है । नाटक का कथानक जीवित पात्रों की क्रियाशीलता द्वारा ही प्रस्फुटित होता है । अतएव नाटक की सफलता के लिए नाटकीय स्थितियों की योजना के साथ-साथ चरित्र-चित्रण की प्रभावात्मकता भी आवश्यक है । नाटक में उसके पात्र ही मूल आधार होते हैं जिनके संवादों के साथ समस्त नाटकीय कार्य-व्यापार सम्पृक्त रहते हैं । पात्र के पृथक वस्तु अथवा क्रिया का नाटक में कोई महत्त्व नहीं होता । नाटक में जीवन के सभी रूपों एवं समस्त गतिविधियों का परिचय पात्रों के माध्यम से मिलता है । विभिन्न प्रकार के पात्र भिन्न संस्कारों, मान्यताओं, नीतियों, रूढ़ियों अन्तरविरोधों, परिस्थितियों और वर्गों के उद्घाटक होते हैं । डा.शान्ति-स्वरूप गुप्तजी के अनुसार "किसी भी पात्र के व्यक्तित्व के दो पक्ष होते हैं - बाह्य और आन्तरिक । बाह्य व्यक्तित्व के अन्तर्गत उसका आकार, रूप, वेशभूषा, आचरण का ढंग, बातचीत आदि आते हैं । और आन्तरिक पक्ष का सम्बन्ध उसकी मानसिक तथा बौध्दिक विशेषताओं से होता है ।" [१] सफल चरित्र-चित्रण के लिए मानव-स्वभाव का सामान्य ज्ञान, मनुष्य के अन्तर्मन का परिचय, उसके भावों, विचारों, राग-द्वेषों, अंत:संघर्षों की जानकारी के अतिरिक्त सहानुभूति, कल्पनाशक्ति तथा वर्ग-विशेष की जानकारी अपेक्षित

---

१) डा.शान्तिस्वरूप गुप्त - पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिध्दान्त, पृष्ठ-३६६.

है । नाटककार को सभी प्रकार के भावों - विचारों को पात्रों के माध्यम से ही उपस्थित करना पड़ता है । नाटक में केवल उसके पात्रों के संवाद होते हैं, नाटककार की जिव्हा सदा बंद रहती है । उपन्यास, कहानी, कविता आदि में उनके रचयित पात्र सर्वत्र उपस्थित रह सकते हैं । लेकिन नाटक में नाटककार का अनुपस्थित रहना ही उसकी विशेषता है । नाटक विधा के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के पात्रों का समावेश किया जा सकता है । आलोचकों ने सुविधा के लिए पात्रों के निम्न लिखित भेद किए हैं - "चरित्र-चित्रण के भेद -

३.१ चरित्र-चित्रण के भेद -

३.१.१ व्यक्ति प्रधान चरित्र -

वह पात्र जो वर्ग-विशेष के गुण-दोषों का प्रतिनिधित्व न कर अपनी विशिष्ठ चारित्रिक विशेषताएँ रखता है ।

३.१.२ वर्ग प्रधान चरित्र -

वह पात्र जो अपने वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है ।

३.१.३ स्थिर पात्र -

स्थिर पात्र आरंभ से लेकर अन्त तक समान, स्थितप्रज्ञ रहते हैं, उनमें कोई परिवर्तन नहीं होता ।

३.१.४ परिवर्तनशील पात्र -

ये पात्र विकसनशील होते हैं, परिस्थिति का छोटा सा आघात भी उनकी जीवन दिशा और विचार पद्दति को बदल देता है ।"[१]

---

१) डा.शान्तिस्वरूप गुप्त - पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्दान्त, पृष्ठ-३६८.

"रातरानी" की पात्र योजना -

नाटककार लक्ष्मीनारायण लालजी ने अपने प्रस्तुत नाटक में पूरी सफलता के साथ पात्रों का चरित्र-चित्रण किया है । इन्होंने अपने नाटक में विविध प्रकार के पात्रों का चयन बड़ी कुशालता से किया है । लेखक अपने भावों-विचारों को पात्रों के माध्यम से विशिष्ट उद्देश्य को सामने रखकर प्रकट करता है ।

"रातरानी" एक सामाजिक नाटक है । आलोच्य नाटक १९६३ ई. में प्रकाशित हुआ । हिन्दुस्थान स्वतंत्र होकर यही कोई १४-१५ साल हो गये थे । भारत-पाकिस्तान के रूप में हिन्दुस्थान का बँटवारा हो गया। ऐसी परिस्थिति में पाकिस्तान ने १९६२ ई. के समय भारत पर आक्रमण किया औद्योगीक क्षेत्र में नये-नये आयोजन किए गए है । इसमें मजदूर लोगों की समस्या तथा पारिवारिक संघर्षों को पाठकों के सामने रखना लेखक का प्रस्तुत नाटक के पीछे मुख्य उद्देश्य रहा हैं । लेखक ने आलोच्य नाटक के माध्यम से सामाजिक और पारिवारिक स्थिति का चित्रण किया है ।

प्रस्तुत नाटक में लेखक ने महानगरीय परिवेश में पलीत तथा अर्थ और पारिवारिक विषम व्यवस्था से त्रस्त लोगों का चित्रण किया है । आलोच्य नाटक में प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप में प्रमुख और गौण लगभग १५ पात्र हैं । हर एक पात्र अपने-अपने स्थान पर स्थित अपनी-अपनी भूमिका निभाता है । इसमें से प्रमुख तथागौण पात्रों का चरित्र-चित्रण इसप्रकार किया जा सकता है -

३.२ प्रमुख पात्र -

३.२.१ कुंतल (नायिका)

३.२.२ जयदेव (नायक)

३.३ गौण पात्र

३.३.१ निरंजन -

३.३.२ सुंदरम् -

३.३.३ माली -

३.३.४ योगी -

३.३.५ प्रकाश -

इन पात्रों के सिवाय अन्य पात्र हैं -

मालिक इंजीनियर साहब, डिप्टी मामा, प्रिंसिपल पं. रामचंद्र शुक्ल, वकील साहब, लेडी वार्डन मिसेज सिंह, कॅप्टन विजय, सिपाही लाल, किशोरी, अकाउंट ऑफिसर आदि पात्र हैं ।

३.२ प्रमुख पात्र -

३.२.१ कुंतल -

कुंतल 'रातरानी' नाटक की नायिका है । प्रस्तुत नाटक पात्र और चरित्र-चित्रण की दृष्टि से नायिकाप्रधान होने के कारण प्रथम में नायिका का चरित्र-चित्रण करना आवश्यक है ।

कुंतल ऐसे पिता की पुत्री है, जिसके जीवन में केवल आदर्श ही आदर्श रहा है । संगीत और साहित्य प्रेम तथा दया, माया, ममता, सहानुभूति, त्याग आदि गुणों ने उसके व्यक्तित्व को अद्भुत गरिमा प्रदान की है । वह आदर्श भारतीय नारी का प्रतिनिधित्व करती है । इसके साथ - साथ निसर्ग प्रेम, आत्म-सम्मान की भावना, आदर्श गृहीनी, समझदार, मजदूरों के प्रति स्नेह रखनेवाली आदि गुणों से युक्त है । कुंतल की चारित्रिक विशेषताएँ इसप्रकार हैं --

१) बचपन

कुंतल प्रिंसिपल पंडित रामचंद्र शुक्ल की इकलौती संतान है । उसका वास्तविक नाम शकुन्तला है । कालिदास ने अपने नाटक "अभिज्ञान शाकुंतलम" में जिस शकुन्तला का निर्माण किया है, वैसा ही सौन्दर्य कुंतल ने पाया है। लेकिन जिन्दगी के मोड़पर संस्कारशील, शिक्षित, संगीत विशारद आदि गुणों से युक्त होते हुए भी उसे बहुत कुछ सहना पड़ता है, इसका कारण है पिताजी की निर्धनता । वैसे पंडित शुक्लजी की अच्छी-खासी घर-गृहस्थी थी लेकिन कुंतल की माँ कुंतल को जन्म देकर हमेशा के लिए इस संसार से विदा होती है । इसीकारण कुंतल बचपन से ही अपने माँ के प्यार से वंचित रही है । लेकिन पंडित शुक्लजी ने उसे कभी माँ के प्यार की कमी महसूस नहीं होने दी । वे स्वयं उसे माँ-बाप, भाई-बहन का प्यार देते रहें । बचपन से ही कुंतल अध्ययन तथा अन्य क्षेत्रों में होशियार रही है । इसी वजह से वह बी.ए. प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होती है और संगीत-कला में "संगीत-विशारद" की उपाधि प्राप्त की है । वह संस्कारशील, संगीत की जानकार निसर्ग प्रेमी साहित्य में रुचि रखनेवाली, निर्बल के प्रति सहानुभूति जतानेवाली आदर्श भारतीय नारी है ।

२) दहेज का शिकार -

भारतीय समाज में भस्मासूर के समान फैली हुअी दहेज समस्या एक भयंकर रूप धारण कर चुकी है । प्रस्तुत नाटक की नायिका कुन्तल को भी इस समस्या का शिकार होना पड़ा है । नाटककार ने इस समस्या को कुंतल के जरिए उद्घाटित करने का प्रयास किया है । आजकल अमीर-गरीब तथा समाज में स्थित अन्य वर्गों के लोगों में दहेज लेना और देना आत्मसम्मान

की बात समझी जाती है । लेकिन दहेज देनेवाले निर्धन पिता की मानसिकता को आज तक कोई भी आँक नहीं सका । कुंतल का विवाह जयदेव से पहले निरंजन बाबू से तय हुआ था, जो विश्वविद्यालय में प्रोफेसर के रूप में कार्यरत हैं । और उनके पिता अॅडव्होकेट हैं । लेन-देन के व्यवहार में कुंतल के पिता पंडित रामचंद्र शुक्लजी ५००० रु. दहेज देना स्वीकार कर चुके हैं, लेकिन वकिल साहब ८००० से कम एक छद्म की लेने को तैयार नहीं । परिणामस्वरूप बनी-बनाई शादी टूट जाती है । इसमें लड़किवालों की निर्धनता, मानसिकता, संस्कारशील लडकी, उसकी सुन्दरता का जरा भी खयाल नहीं किया जाता । अपनी बेटी की शादी का अधूरा सपना लेकर पंडीत रामचंद्र शुक्लजी इस जहान को छोड़कर हमेशा के लिए चले जाते हैं । इसी प्रकार कुन्तल को दहेज का शिकार बनना पड़ता है । आगे चलकर इन्सानियत के पुजारी इंजिनियर-साहब कुंतल को अपनी बहू के रूप में स्वीकार करते हैं । वे उसे हमेशा नन्दनवन की इन्द्रायणी कहते हैं । कुंतल जयदेव की पत्नी बन जाती है । उसका दुर्भाग्य तो देखो शादी से पहले पिताजी का देहान्त हो जाता है । और शादी के बाद पिता जैसे प्रेम करनेवाले ससूर इंजिनीयर साहब अपने नन्दनवन को कुंतल रूपी इंन्द्रायणी के हवाले करके चले जाते हैं ।

३) संगीत प्रेमी -

कुंतल मोरिस कॉलिज से 'संगीत विशारद' की उपाधि हासिल कर चूकी है । उसके नस - नस में संगीत समाया हुआ है । प्रस्तुत नाटक का प्रारंभ भी कुंतल के काव्य गायन से ही होता है । जिस प्रकार संगीत में स्थित सप्त सुरों को इकट्ठा कर मधुरमय बीन बजती है उसी प्रकार कुंतल हमेशा विषम परिस्थिति होने के बावजूद भी अपनी गृहस्थी को संगीत जैसे मधुरमय बनाने का प्रयत्न करती रहती है । जयदेव कुंतल को नौकरी करने के लिए कहता है ।

कुंतल को नौकरी करना कतई पसंद नहीं, मगर विश्वविदयालय में संगीत अध्यापिका की नौकरी मिलने पर वह उसे स्वीकार करती है । इससे स्पष्ट है कि उसकी संगीत पर कितनी असीम श्रध्दा थी । वह अपने होनेवाले पति प्रोफेसर निरंजन को जो पत्र भेजती है, उसमें भी उसने संगीत के बारे में लिखा था । उसके अनुसार "संगीत तो जैसे मुझे हरदम बाँधे ही रहता है । क्या मजाल कि मैं उसे एक क्षण के लिए भी भुला सकूं । लगता है, यह संगीत मेरे अन्त स्तलवासी की पुकार है । मैं उसे देख नहीं पाती, इन कानों से सुन नहीं पाती, पर मेरे भीतर एक के बाद दूसरा सुर, एक के बाद दूसरा राग...." [१] इससे स्पष्ट है कि जीवन में वह संगीत के सूरों को ही अपनाती है । अत: सिध्द होता है कि कुंतल संगीत-प्रेमी तथा संगीत की जानकार है ।

४) <u>निसर्ग-प्रेमी</u>

कुंतल निसर्ग प्रेमी है । वह पेड़-पौधों से अपने घर के सदस्य की भाँति प्यार करती है, उनपर आयी किसी भी प्रकार की आँच वह सह नहीं सकती । उसे हमेशा फुलवारी में काम करना, माली बाबा के काम में हाथ बँटाना अच्छा लगता है । स्वयं इंजीनियर साहब ने फुलवारी का निर्माण किया था । उसे पल्लवित-पुष्पित, हराभरा रखना कुंतल अपना परम कर्तव्य समझती है । कुंतल के अनुसार फुलवारी में स्थित पेड़, पौधे, फूल स्वयं अपने मन के मालिक है । उनका मालिक कोई नहीं है । उनकी सेवा करना वह अपना भाग्य समझती है । जयदेव के प्रेस के कर्मचारी हड़ताल कर लेते हैं । इस विषय पर जयदेव और कुंतल के बीच वार्तालाप चल रहा था । उसी समय जयदेव बातों-बातों में आवेश में

---

१) डा.लक्ष्मीनारायण लाल - रातरानी, पृष्ठ ७१.

आता है, और टेबल पर रखी कैंची को लेकर क्रोटन्स की पत्तियों में कैंची चला देता है । कुंतल भावनाविवश होकर जयदेव से कहती है - "हाय-हाय ! यह क्या कर रहे हो ? च... च... च... इस पर कैंची चला दी ।" [१] इससे स्पष्ट है कि कुंतल निसर्ग से कितना प्रेम रखती है ।

५) समझदार -

कुंतल जयदेव से काफी समझदार है । इसी कारण वह हमेशा समझदारी से काम लेती है । एक दिन जयदेव क्रोटन्स के पौधे पर कैंची चलाता है । यह कुंतल, सह नहीं सकती । तब जयदेव उसके लिए ढाई रुपये का दूसरा पौधा खरीदना चाहता है, तब वह उससे कहती है, हर एक चीज का मूल्य किया नहीं जाता । जयदेव ने अर्थयुग की बात छेड़ने पर व समझदारी से जयदेव से कहती है "तभी तो इस युग में मनमाने कैंची नहीं चलाई जा सकती । प्रेस में तुमने यही कैंची चलाई थी न ! एक मशीनमैन को निकाला, दो फोरमैनों की छंटनी की ।" [२]

हर समय कुंतल समझदारी से काम लेती है । जब किशोरी की मानसिकता का विचार किया जाता है तब जयदेव कहता है, उसने कुछ आनन-फानन करने से पहले वह पुलिस की बेड़ियों में पड़ा जेल में नजर आता । लेकिन कुंतल जानती है पुलिस, जेल किसी का कुछ नहीं बिगाड़ सकता । इसीलिए वह जयदेव से कहती है - "यह तुम्हारा सोचना गलत है । यह दंडनीति, यह पुलिस, ये जेलखाने इस समस्या को नहीं खत्म कर सकते ।" [३]

---

१) डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल - रातरानी, पृष्ठ-२५.
२) वहीं पृष्ठ-२५.
३) वहीं पृष्ठ-१०४.

६) ममतामयी -

कुंतल की जयदेव के साथ शादी हो गई है, लेकिन अभी तक वे निसंतान है । कुंतल संस्कारशील होने के कारण उसका हमेशा मानवतावदी दृष्टिकोण उभर आया है । प्रेस कर्मचारियों के बच्चों को देखकर कुंतल की मातृ-सुलभ भावनाएँ सहज ही उभर आती है । कुंतल हड़तालियों का समर्थन करती है, तब जयदेव उसे उनकी सहानुभूति दिकानेवाली घोषित करता है, तब कुंतल जयदेव से कहती है - "ओहो, यह बात ! उस दिन कर्मचारियों के बच्चे यहां सुबह ही सुबह आये । मुझे "माताजी... माताजी, मां... मां.." कहकर पुकारने लगे । किसी के तन पर न ठीक से कोई कपड़ा था, न किसी का पिछले चार दिनों से पेट भरा था । सब नंगे और भूखे । क्या करती मैं ? "[१] इससे कुंतल का ममतामयी स्वभाव दृष्टव्य है । वह हर समय उन बच्चों की तथा उनकी माताओं की मदद करती रहती है ।

किशोरी की पत्नी को बच्चा होनेवाला था । वह उसकी मदद करती है तब जयदेव कुंतल के खिलाफ आवेशित होता है, तब वह उसे समझाती है कि "किशोरी की पत्नी को बच्चा होनेवाला है । वह अस्पताल में बेहोश पड़ी थी ।"[२] इससे स्पष्ट होता है कि वह हरेक बच्चे को मां का सा प्रेम देने में समर्थ है । अत: वह ममतामयी है ।

७) त्याग की मूर्ति

कुंतल त्याग की प्रतिमूर्ति है । त्याग उसके रोम-रोम में भरा हुआ है । बचपन से लेकर अब तक उसके पिता उसे त्याग का महत्त्व समझाते आए है ।

- -

१) डा. लक्ष्मीनारायण लाल - रातरानी, पृष्ठ - २४.
२) वहीं पृष्ठ - १०३.

संस्कार शील कुंतल उसे कैसे अस्वीकार कर सकती है । वह अपने पिता ने बताई हुई बात को निरंजन को लिखे खत में दोहराती है । वह खत में लिखती है - "मेरे पिताजी मुझसे अक्सर कहा करते हैं कि किसी को भी पाने के लिए त्याग की आवश्यकता है । यह त्याग अपने को खाली कर जलने के लिए नहीं, वरन् अपने को पूर्ण करने के लिए है । वे कहते हैं, त्याग का अर्थ प्रेम है ।" [१] और प्रेम को ईश्वर की देन मानी जाती है । आदर्श गृहीनी के लिए त्याग का होना अत्यावश्यक है । वह सारे सुख चैन खोकर त्यागभरी जिन्दगी जी लेती है । नाटक के अन्त में प्रेसकर्मचारी हड़ताल करते हैं, वे सीधा जयदेव के घर चले आते हैं, तब अपने पति को बचाने हेतु, कुंतल भीड़ में घूस जाती है । पुलिस ने तब तक लाठी चार्ज किया था, हड़तालवाले पत्थर फेंक रहे थे, सारी मार कुंतल सह लेती है । उपर्युक्त विवेचन से कुंतल का त्यागी रूप सिध्द होता है ।

८) स्वाभिमानी । आत्मसम्मान की भावना -

कुंतल अपने-आप में आत्मसम्मान की भावना संजोए रखती है । वह बड़ी सी-बड़ी परिक्षा देने के लिए तैयार है लेकिन वह किसी की दया का पात्र बनना नहीं चाहती । जब जयदेव कुंतल ने निरंजन बाबू को शादी से पहले लिखे खतों से लेकर शंकालु होता है, तब स्वाभिमानी कुंतल जयदेव से वादा करती है कि एक न एक दिन वह उन पत्रों को वापस ला देगी । एक दिन मौका पाते ही वह निरंजन बाबू से पत्र वापस माँगती है और वे उसे तुरंत दे भी देते हैं । जयदेव को लगा था कि इन पत्रों में रूमानियत के मसाले होंगे,

---

१) डा. लक्ष्मीनारायण लाल - रातरानी, पृष्ठ - ७१.

मगर पत्रों में स्थित साहित्य, दर्शन, संगीत की बातें सुनकर उसकी अपेक्षा पूर्ति में बाधा निर्माण होती है । प्रस्तुत प्रसंग में कुंतल अपना स्वाभिमान सिद्द करती है ।

जयदेव ने कुंतल को युनिव्हर्सिटी के म्यूझिक विभाग में अध्यापिका की नौकरी निरंजन बाबू की शिफारिश से दिलवाई थी । इस बात को जानने पर वह अपनी नौकरी से इस्तिफा दे देती है । वजह यह है कि वह किसी की दया नहीं चाहती । जयदेव ने समर्थन माँगने पर वह कहती है - "नहीं । मेरी यह नौकरी मिली थी, निरंजन बाबू के प्रयत्न से । मैं उनकी दया नहीं चाहती । यह मेरा अपमान है । इस देह को मैं दुखों की आग में भस्म कर दूँगी, और आत्मा की जय जयकार करूँगी कि मैं मुक्त हूँ, मैं मनुष्य हूँ । दया का पात्र केवल पशु है ।" [१] वह अपनी आत्मसम्मान भावना की रक्षा के लिए कड़ा संघर्ष करती है ।

९) कर्मचारियों के प्रति सहानुभूति -

कुंतल की प्रेस के कर्मचारियों के प्रति सहानुभूति है, और यह बात उसका पति जयदेव हमेशा दोहराता रहता है । कुंतल कर्मचारियों की अनेक समस्याओं से वाकिफ है । वह स्वयं पढ़ी-लिखी होने के कारण उन कर्मचारियों की माँगों को वह अच्छी तरह से जानती है । और उनसे सहानुभूति जताती है । उनका हक देने के लिए वह हर समय अपने पति जयदेव को इतल्ला देती है । वह इन्सानियत को पूरा करने के लिए हड़तालकर्ताओं के नेता किशोरी की पत्नी की सहायता करती है । कुंतल जयदेव को बार-बार प्रेरित करती है कि वह समय पर कर्मचारियों की माँगों पर विचार करके उनके

---

१) डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल - रातरानी, पृष्ठ - ९५.

साथ न्याय करें । उसके अनुसार धन के धनी कर्मचारी उनका जितना हिस्सा है वह उन्हें नहीं मिलता । अपने इस बात को स्पष्ट करने हेतु कुंतल का कहना दृष्टव्य है कि - "धन और अधिकार की समस्या । इस बार मनुष्य जब धन-संग्रह करना शुरु कर देता है, तब वह अपने संग्रह के उद्देश्य को भूल जाता है, और तब वह उस धन के नशे में यह भी भूल जाता है कि इस धन का कमाने वाला कौन है, उसका इसमें कितना हिस्सा है ।" [१]

कुंतल प्रेस के कर्मचारियों को न्याय देने की कोशिश में लगी रहती है । वह उन्हें महँगाई भत्ता, बोनस देने के लिए जयदेव से कहती है । तथा किशोरीलाल और अन्य काम से हटाए गये कर्मचारियों को फिर से काम पर लेने की सलाह देती है । जब निरंजन और जयदेव के बीच इन बातों कोलेकर बातचीत होती है तब जयदेव कहता है - "जनाबे आली । यह जो मेरी पत्नी श्रीमती शकुन्तला देवी हैं न, मेरे विरोध में ही इनकी परम शान्ति है । इनकी सहानुभूति मुझसे अधिक प्रेस के वर्कर्स से है, उनके बच्चों से है । मैं जो चाहूँगा उसे ..... ।" [२] इससे स्पष्ट है कि कुंतल की प्रेस कर्मचारियों के प्रति सहानुभूति थी ।

१७) **रातरानी का प्रतीक -**

लक्ष्मीनारायण लाल लिखित नाटक 'रातरानी' नामक शीर्षक कुंतल का ही प्रतीक है । नाटक की नायिका कुंतल (रातरानी) जैसे रातरानी के फूल अपने सुगंध से सारे शुष्क वातावरण को सुगन्धित कर देता है, उसी तरह कुंतल अपने पति जयदेव के शुष्क और मुरझाए जीवन में

---

१) डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल - रातरानी, पृष्ठ - १०४.

२) वही, पृष्ठ - १००.

रातरानी की भाँति महकती है और अपनी सुगंध से जयदेव के जीवन को हरा भरा करने की कोशिश करती है । लेखक ने नारी को इस नाटक में महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है । इस सन्दर्भ में डॉ. कमलिनी मेहता का मत दृष्टव्य है कि - " नाटककार ने 'रातरानी' में आदर्श प्रतीक और यथार्थ की ऐसी त्रिवेणी बहाई है जिसके जल में कहीं भी मिलावट नहीं दिखती ।" [१]
अत: स्पष्ट है कि नाटक की नायिका कुंतल रातरानी के आदर्श प्रतीक रूप में उभर आयी है ।

११) आदर्श भारतीय नारी । आदर्श गृहिनी -

कुंतल आदर्श भारतीय नारी का प्रतिनिधित्व करती है । आदर्श नारी में जितने सारे गुणों की आवश्यकता है वे कुंतल के चरित्र में विद्यमान हैं । कुंतल के व्यक्तित्व को स्पष्ट करते हुए जयदेव तनेजा कहते हैं - "वह उन लड़कियों में से नहीं है, जो मजनुओं की लैला बनने का स्वप्न देखती हैं । वह एक हिन्दू स्त्री है - पति में श्रद्धा करनेवाली, उस पर भरोसा और विश्वास रखनेवाली । कुंतल विवाह को स्त्री-पुरुष के आत्म-दर्शन का माध्यम मानती है और पति को व्यक्ति नहीं, एक संस्था के रूप में स्वीकार करती है । इसका प्रमाण हमें निरंजन बाबू को लिखे गए उनके पत्रों और पत्रों सम्बन्धी वार्तालाप से मिलता है ।" [२]

कुंतल निरंजन से जो पत्र भेजती है उसके सन्दर्भ में अपने पति जयदेव को वह परिक्षा देना चाहती है । कुंतल पति को परमेश्वर मानती है । उसे हमेशा जयदेव की चिन्ता लगी रहती है । उसके घर में भी आदर्श ही

- -

१) डॉ. कमलिनी मेहता - नाटक और यथार्थ, पृष्ठ - ३४४.

२) जयदेव तनेजा - आज के हिन्दी रंग नाटक परिवेश और परिदृश्य, पृष्ठ - ८७ व ८८.

आदर्श रहा था । अत: वह निरंजन को भेजे पत्र में लिखती है - "मैं सौभाग्य से एक ऐसे विद्वान, सह्दय पिता की अकेली कन्या हूँ, जिसके जीवन में केवल आदर्श ही आदर्श रहा । आपको पता हैं मेरे पिताजी की विद्वत्ता के बारे में - संस्कृत, अंग्रेजी, बंगला और हिन्दी साहित्य के रसज्ञ... ।" [१] उपर्युक्त विवेचन से कुंतल का आदर्श दृष्टिगोचर होता है ।

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि ममतामयी, समझदार संगीत तथा निसर्ग प्रेमी, त्याग की मूर्ति, स्वाभिमानी, आदर्श, गृहिनी, हमदर्द कुंतल एक आदर्श की प्रतिमूर्ति है । जिससे मानवतावादी दृष्टि का सूत्रपात किया है ।

३.२.२ जयदेव

प्रस्तुत नाटक नायिका प्रधान होने के कारण नाटक की नायिका कुंतल है । जयदेव इंजीनियर साहब का इकलौता बेटा है । इंजीनियर साहब कुंतल की शादी अपने बेटे जयदेव के साथ करवाते हैं । जयदेव और कुंतल दोनों एक दुसरे के पारस्पारिक स्नेह बंधन में बँध जाते हैं । जयदेव के माध्यम से लेखक ने परिवर्तनशील व्यक्ति का चित्रांकन किया है, लेकिन उससे पहले जयदेव के व्यक्तित्व में अनेक बुराइयों का अन्तर्भाव होने के कारण उसे सिर्फ "रातरानी" नाटक का प्रमुख पात्र कहना ही उचित होगा । लेकिन रिश्ते के आधार पर यदी देखा जाए तो वह कुंतल का पति है और कुंतल "रातरानी" नाटक की नायिका होने के कारण जयदेव नायक सिध्द होता है ।

स्वातंत्र्योत्तर भारत में जयदेव जैसे अनेक नवयुवक, व्यक्ति है जो पाश्चात्यों का अंधानुकरण करते हैं, पूँजीपति वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं,

- -

१) डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल - रातरानी, पृष्ठ - ७०.

जिनका व्यक्तित्व दोहरा है, वह हमेशा घडियाल के लोलक की तरह दोलायमान रहता है । ऐसा ही जयदेव का व्यक्तित्व है । लेकिन आगे चलकर लेखक ने जयदेव में परिवर्तन लाने का प्रयास किया है । जयदेव की चारित्रिक विशेषताएँ इसप्रकार है --

(१) पूँजीपति वर्ग का प्रतिनिधि -

वर्तमान युगीन समाज जाति-पाँति को छोड़कर उच्च वर्ग और निम्न वर्ग में विभाजित है । औद्योगिक दृष्टि से देखा जाय तो द्वंद्वात्मक भौतिक मार्क्सवाद के अनुसार शोषक और शोषित वर्ग में समाज विभाजित है । शोषक वर्ग जो अपनी आवश्यकताओं से परे अर्थ समय करता है, साधारण लोग, मजदूर आदि का शोषण करता है, वही पूँजीपति वर्ग है । जयदेव स्वयं प्रेस कर्मचारियों का शोषण करता है । उनके साथ अमानवीयता से पेश आता है, अत: वह पूँजीपति वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। सत्ता संघर्ष तो युगो-युगों से चला आ रहा है, लेकिन आधुनिक काल में इस संघर्ष ने नया मोड़ लिया है । हर एक व्यक्ति, समाज, देश अपना अधिकार चाहता है । इसी अधिकार को लेकर अनेक समस्याओं का उद्घाटन प्रस्तुत नाटक में हुआ है ।

इंजीनियर साहब दयालू, सहृदय और देवोपम गुणों से युक्त थे । जयदेव उनका इकलौता बेटा है । वे अपने बेटे के साथ सुसंस्कृत, बी.ए. पास, संगीत विशारद युवति कुंतल का विवाह बड़े सुख-समाधान से करवाते है । जयदेव भी स्वयं एम्.कॉम. पास है । उनकी शादी के एक साल बाद इंजीनियर साहब का देहान्त हो जाता है । जाते समय वे अपने बेटे के नाम एक बड़ा सा प्रेस और ७५ हजार रुपये बैंक बैलेस छोड़ जाते हैं । इतनी सारी सम्पत्ति का जयदेव अकेला मालिक है । उसके मन में सम्पत्ति को लेकर अहं पैदा होता है ।

जब जयदेव और कुंतल के बीच प्रेस कर्मचारियों को लेकर बातचीत चलती है और मजदूरों पर किए अन्याय को लेकर कुंतल जब जयदेव से कहती है तब जयदेव अहंभाव से कहता है - " हाँ - हाँ । मैं प्रेस का मालिक हूँ ।" [१]

जयदेव के प्रेस में लगभग सौ कर्मचारी काम करते हैं उनके साथ वह अमानवीयता से पेश आता है । एक पूँजीपति की भाँति उनका शोषण करता है । जिन कर्मचारियों ने ज्यादह काम करके प्रेस को फायदेमंद रखा है उनकी बोनस, भत्ते की माँग तो दूर लेकिन उनका हर मास का वेतन तक नहीं देता । तब मजदूर हड़ताल करने पर उतारु हो जाते हैं । हड़ताल करने पर जयदेव उन्हें काम से निकालता है । कुंतल ने समझाने पर भी जयदेव उसके खिलाफ बोलता है । उसे दूसरों को खाली कर देना मालूम है दूसरों को भर देना मालूम नहीं है । उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि जयदेव पूँजीपति वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है ।

(२) अर्थ पुरुष -

जयदेव अपने आप को अर्थयुग का पुरुष मानता है । वह इन्सान की जिन्दगी में रुपए को सर्वश्रेष्ठ मानता है । जहाँ पैसा कमाने के लिए गला काट प्रतियोगिता चलती है वह उसे अपनाता है । इसी वजह से वह अपने दोस्तों के साथ जुआ खेलता है । खेलते समय वडिलोपार्जित ७५ हजार रुपये बैंक बैलेंस गँवा बैठता है, अन्त में यारों के साथ हाथापाई पर उतर आता है । जयदेव निठल्ला बन जाता है, प्रेस के काम में दखल नहीं देता । इससे उसे अनेक समस्याओं का

- -

१) डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल - रातरानी, पृष्ठ - ४३.

सामना करना पड़ता है । जयदेव के अनुसार स्त्री को लक्ष्मी कहने का अर्थ सिर्फ रुपया है । वह हर एक चीज को पैसे में तोलता है । अपने पत्नी को उसकी इच्छा के खिलाफ नौकरी करने पर विवश कर देता है । जब जयदेव और सुंदरम के बीच कुंतल की नौकरी के सन्दर्भ में बातचीत चल रही थी । तब वह सुंदरम से कहता है - "रुपये के कारण इस तरह शादियां टूट सकती हैं । रूप , चरित्र, विद्या और कला-साहित्य इन सबसे बड़ा रुपया है, रुपया ।" [१] जब जयदेव और कुंतल के बीच प्रेस कर्मचारियों को लेकर वार्तालाप चल रहा था तब जयदेव कर्मचारियों के प्रति नाराज होता है, और आवेश में आकर टेबल पर पड़ी कैंची को लेकर क्रोटन्स की पत्तियों पर चलाता है । तब भावनाविवश कुंतल नाराज होती है । तब जयदेव उसे दुसरा पौधा खरीदने का वादा करता है । और कहता है यह अर्थयुग है, "इकोनॉमिक एज" । तब कुंतल अपने बिगडे हुए पति को समझाती है - "तभी तो इस युग में मनमाने कैंची नहीं चलाई जा सकती । प्रेस में तुमने यही कैंची चलाई थी न । एक मशीनमैन को निकाला, दो फोरमैनों की छंटनी की ।" [२] लेकिन जयदेव में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं हुआ ।

(३) दोहरा व्यक्तित्व

जयदेव का व्यक्तित्व दुरंगी है । वह चाहता है कि हर एक स्त्री पुरुष के दोन व्यक्तित्व होने चाहिए । एक आन्तरिक और बाह्य । वह कभी अधिकार,कभी शक्ति, कभी रूप और कभी अर्थ का या भौतिकवादी व्यक्तित्व के रूप का मुखौटा धारण करता है । वह अपनी पत्नी कुंतल और प्रेस कर्मचारियों पर अपना अधिकार जमाना चाहता है । इसके साथ-साथ जयदेव

---

१) डॉ.लक्ष्मीनारायण लाल - रातरानी, पृष्ठ - ४३.

२) वही पृष्ठ-२५.

झूठे अर्थ का मुखौटा धारण कर आधुनिकता का ढोंग करता है । वह समय के साथ अपना रंग बदल देता है ।

जब वह अपने यारों के साथ जुआ में हारता है तब उसका व्यक्तित्व हार जाता है । जयदेव निठलला बना जाता है । प्रेस के कर्मचारियों के स्ट्राईक के कारण वह अपना अधिकार, अर्थ की शक्ति और पूँजीपति का रूप भी बदल देता है । परिस्थिति के बदलाव के साथ - साथ उसका मुखौटा गिरने लगता है । उसका व्यक्तित्व झूठा बन जाता है । जयदेव का आन्तरिक और बाहरी व्यक्तित्व हमेंशा-उभर आता है । वह अपनी पत्नी में पत्नी के साथ-साथ दोस्त चाहता है । लेकिन कुंतल आदर्श गृहीनी होने के कारण उसके साथ रंगेरेलियाँ मनाने हेतु बाहर नहीं जा सक्ती । जयदेव को लगता है - कुंतल को नौकरी करनी चाहिए, उसको घर से बाहर निकलना चाहिए । जब बातों-बातोंमें कुंतल जयदेव से कहती है, मुझे भी तुम्हारे साथ होटल में ले चलो, तथा मुझे भी ताश खेलना सिखा दो । तब जयदेव का अन्तर्मन कह उठता है - "हमारी तरह ताश में केवल दो ही पत्ते नहीं होते बीवी और बादशाह । अरे उसमें बावन पत्ते होते हैं, जिनमें सैकड़ों खेल और असंख्य चालें होती हैं । तुम तो मेरी पत्नी हो - इस घर की लक्ष्मी ।" [१]

अपने प्रेस के कर्मचारियों के साथ अमानवीयता से पेश आना उसके व्यक्तित्व का एक पहलू है । अपनी पत्नी के साथ भी वह दूर्व्यवहार रखता है । कुंतल बीमार होने पर भी उसे नौकरी करने के लिए विवश करता है। जब वह अपने यारों के साथ ताश खेलते समय पूरी तरह से हार जाता है तब

- -

१) डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल - रातरानी, पृष्ठ - ७३.

जयदेव दुर्बल अपने-आप को अकेला महसूस करता है । उसका आन्तरिक और बाह्य रूप बाहर आ जाता है । जयदेव कुंतल से कह उठता है - "कुंतल ! मैंने तुमसे कहा था न, मेरे पास दो व्यक्तित्व हैं पर आज मैं तुमसे कहता हूँ कि ये दोनों झूठे हैं । विश्वास करो, आज मुझे पहली बार चोट लगी है, वह भी सीधे हृदय में । कुन्तल, इस तरह अगर तुम रोओगी तो मैं कहाँ जाऊँगा । तुम नहीं जानती मैं अकेले कितना निर्बल हूँ ।"[१]

(४) जुआरी तथा ऐशोआरामी -

जयदेव पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरन करनेवाला आधुनिक युवक है । वह जुआ खेलना अपना गौरव मानता है । जब जुए के सन्दर्भ में कुंतल जयदेव से कहती है जुआ खेलोगे ? तब जयदेव बड़े अभिमान से कहता है - "ताश खेलेंगे.. रन... ट्रेल फुल... वोट ... ! जयदेव को पिता द्वारा एक प्रेस और ७५ हजार रूपये विरासत में मिले हैं । वह अपने साथियों के साथ जुआ खेलने, क्लब जाने और नितान्त आराम से जीवन व्यतित करने में पिताजीद्वारा प्रदत्त सारी पूँजी गँवा देता है । वह होटल तथा क्लबोंमें जाकर रंगरंगेलियाँ मनाता है । इसी बात को स्पष्ट करते हुए कुंतल अपनी सखी सुंदरम से कहती है - "प्रेस संघ बड़ा रह गया, सुन्दरम ! आये दिन तो स्ट्राइक होती रहती है । जय तो प्रेस में बैठता ही नहीं । हरदम घूम - फिर, होटल रेस्तराँ, कॉफी-हाउस, पिक्चर । यहाँ घर पर ताश-रमी, फ्लश । मैं जय को मना भी कैसे करूं । अपने पिता के इकलौते लड़के । पिताजी इनके नाम पिचहत्तर हजार रूपये बैंक में छोड़कर गये ।"[२]

जयदेव के दोस्त प्रकाश तथा योगी जयदेव की कमजोरियों का फायदा उठाकर उससे धोकेबाजी करते हैं । उसे जुए में हराकर उसे लूटते रहते हैं ।

- -

१) डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल - रातरानी, पृष्ठ - ११७.

२) वही पृष्ठ - ३८.

जयदेव का दिनोदिन आर्थिक पतन होने लगता है । अपने आपको रोकना उसे नामुनकिन हो जाता है । इतना सारा होते हुए भी वह अपनी पत्नी को नौकरी करने पर विवश करता है ताकि वह उन पैसों से मोटार कार खरीद सकें । उपर्युक्त विवेचन से जुआरी और नेशोआरामी से युक्त चरित्र का उद्घाटन होता है। अन्त में जुअे के कारण यही दोस्त हातापायी पर उतर आते हैं ।

(५) आधुनिकता के नाम पर अंधानुकरण करनेवाला -

जयदेव हर समय कुंतल से आधुनिकता के सन्दर्भ में कहता रहता है । जब जब भी कुंतल जयदेव से इंजीनियर साहब के व्यक्तित्व की बात छेड़ती है तब वह आधुनिकता के नाम पर खरी-खोटी सुनाता है । वह एक दिन कुंतल से कहता है - "देखता हूँ तुम भी मध्ययुगीन ही हो । अरे, आधुनिक बनो आधुनिक, वरना यह माया-ममता हमें आगे नहीं बढ़ने देगी ।"[१] आधुनिकता के नामपर वह अंधानुकरण करता रहता है । जिसका परिणाम यह होता है कि वह अपना विश्वास, खो बैठता है और अपनी पत्नी पर निरूवंत को भेजे खत के आधार पर शक करता है । अपने व्यक्तित्व में स्वयं गीर जाता है । उसकी स्वार्थांधता पर प्रकाश डालते हुए कुंतल कहती है - "तब तो यह (स्वार्थ) बड़ा गलत है तुम्हारी आधुनिकता का । तभी मैं देखती हूँ आज का सारा आधुनिक समाज केवल शारिर के स्तर पर जी रहा है । इसी का फल है आज समाज में इतना झूठ, इतना आडम्बर, अविश्वास और हृदयहीनता ।"[२] जयदेव पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण करता है ।

(६) स्त्री लोलुप -

जयदेव स्वयं एम्.कॉम. पास है । उसने अपनी अब तक की जिन्दगी में

---

१) डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल - रातरानी, पृष्ठ -५३.

२) वहीं, पृष्ठ -५३.

बहुत दुनिया देखी है । इसीलिए उसे हरदम लगता है कि अपनी पत्नी घर में पत्नी और बाहर एक दोस्त, आधुनिक नारी बनके रहे । वह अपने यारों के साथ रंगरंगेलियां मनाता रहता है । जब कुंतल को सखी सुंदरम् जयदेव के घर आती है, तब जयदेव उसकी ओर आकर्षित होता है । अपनी पत्नी से हमेशा कहता है तुझमें और तुम्हारी सखी में कितना अंतर है । जब सुंदरम् जयदेव को फुलवारी दिखाने हेतु ले जाती है, तब वह उससे शरारत से पेश आता है । उसके साथ हँसी-मजाक करता है, उसकी छेड़छाड करता है, इन बातों पर कुंतल जयदेव को टोकती भी है ।

जयदेव ने काफी दुनिया देखी है । एक दिन कुंतल और जयदेव के बीच प्रेस वर्कर्स के सन्दर्भ बातचीत चल रही थी । तब कुंतल जयदेव की अधिकार वृत्ति पर ध्यान केंद्रित करती है । जयदेव आवेश में आकर सत्य वचन उँडेल देता है - "मैं वह सब ठीक समझाता हूँ । मुझे अलग-अलग सबकी कीमत मालूम है । मुझे ज्यादा उपदेश मत दो । मैंने तुम-जैसी बहुत औरतें देखी है । मुझे ज्यादा उपदेश मत दो । मैंने तुम-जैसी बहुत औरतें देखी हैं ।" [१] बहुत औरते देखी हैं - से तात्पर्य है कि जयदेव स्त्री लोलुप था । तथा अपनी सीता जैसी आदर्श पत्नी पर भी निरंजन को लेकर शक करता है । उसकी शकी वृत्ति का पर्दाफाश होता है । क्योंकि जयदेव को लगता है अपनी पत्नी उससे प्रेम नहीं करती । वह दूसरों का हित चाहती है । इन बातों को स्पष्ट करने के लिए वह कुंतल से कहता है - "नहीं .... आओ, मेरे हाथ पर हाथ रखकर बोलो, प्रेस वर्कर्स और मैं, यह फुलवारी, आर्चेड और मेरी जिन्दगी, निरंजन और जयदेव, बोलो, तुम क्या चाहती हो ?

---

१) डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल - रातरानी, पृष्ठ - १०५.

किधर हो तुम ? क्या हो तुम ?"[१] लेकिन उसकी ये बातें कोई माने नहीं रखती । उसका निरा अहंकार और वहम है ।

(७) परिवर्तनशील/व्यक्तिवादी -

नाटक के अंत में नाटककार ने मानवीय मूल्यों को दृढ किया है । जयदेव अपने आप को निर्बल समझने लगा है । वह अपने अधिकार से पराजित हो चुका है । अंत में वह अपना अधिकार भी खो बैठता है । अपनी पत्नी के सामने मुँह झुकाकर कहता है कि "विश्वास करते, आज मुझे पहली बार चोट लगी है, वह भी सीधे हृदय में ।"[२] जयदेव का मन परिवर्तन होता है । तब उसके पास शक्ति और अर्थ नहीं है । आज तक लूटते आ रहें, रंगरेलियां मनाते रहें दोस्त उसका साथ छोड़ देते हैं इतनाही नहीं तो उससे झगड़ा करते हैं । सिर्फ उसकी पत्नी कुंतल उसे बचाने के लिए तत्पर है । नाटककार ने जयदेव के माध्यम, उसके चरित्र को "आदर्श चरित्र" का बाणा पहनकर उसे व्यक्तिवादी स्तर से उपर उठाकर उसकी भूमिका को मानवतावादी बना दिया है । उसके इस धरातल पर आने में कोई गहरा संघर्ष उभर कर नहीं आ पाया है । जब कुंतल जुलूस के सामने जाने के लिए तैयार होती है । तब जयदेव के ह्रदय में कुंतल के प्रति प्रेम पैदा होता है । उसे रुकने के लिए कहता है । इससे स्पष्ट हो जाता है कि जयदेव का ह्रदय अमानवीयता से मानवता में समाविष्ट होता है । अन्त में वह एक इन्सान के रूप में पाठकों के सम्मुख आता है ।

---

१) डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल - रातरानी, पृष्ठ - १०५.

२) वहीं, पृष्ठ - ११७.

प्रस्तुत विवेचन से स्पष्ट है कि नाटकार ने जयदेव के व्यक्तित्व का उन्नयन करने का प्रयास किया है । साधारण मानवोचित गुण-दोषों से गठित जयदेव का व्यक्तित्व अन्त में उत्थान की ओर अग्रसर होता है ।

३.३ गौण पात्र -

३.३.१ निरंजन -

नाटककार लक्ष्मीनारायण लाल जी ने प्रस्तुत नाटक "रातरानी" में निरंजन को जयदेव के प्रतिपक्ष में रखकर एक आदर्शवादी युवक के रूप में प्रस्तुत किया गया है । निरंजन का वास्तविक नाम निरंजनसिंह है । उसकी आयु लगभग पैंतीस वर्ष की है । वह लखनऊ यूनीवर्सिटी में लेक्चरर के रूप में कार्यरत है । उसके व्यक्तित्व में आदर्श ही आदर्श है । जैसे लगता है निरंजन आदर्श का पुतला है । आरंभ में निरंजन चाहते हुए भी अपने हठी स्वभाव के पिता के कारण कुंतल से विवाह नहीं कर पाता । उनकी बनी-बनायी शादी टूट जाती है । इसका कारण आजकल समाज में व्याप्त दहेज समस्या ही है । कुंतल के पिताजी अपने बेटी के शादी में ५००० रु. दहेज में देना स्वीकार करते है, लेकिन आगे चलकर निरंजन के पिताजी ॲडव्होकेट साहब ८००० से कम लेने को तैयार नहीं होते और परिणाम स्वरूप निरंजन और कुंतल की शादी टूट जाती है । तब से लेकर सुसंस्कृत निरंजन अपने पिता से अलग रहता है । उनसे सम्बन्ध विच्छेद करता है । उसके मन में कुंतल के प्रति अपराध की भावना तैयार होती है । वह किसी भी रूप में कुंतल से परीक्षा देना चाहता है । इसलिए वह जब भी कुंतल से मिलता है तब कहता है कि मैं तुम्हारी परिक्षा का पात्र बनना चाहता हूँ । वह अपने आपको, कुंतल के आगे कायर और अपराधी समझता है । और इसी के कारण वह कुंतल के कहने पर सुंदरम्

से चुपचाप विवाह कर लेता है । वह जानता था कि इस विवाह के कारण उसे अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा । क्योंकि निरंजन उच्चकुल में जन्मा था और सुन्दरम एक कायस्थ परिवार की सन्तान थी । लेकिन वह कुंतल की आज्ञा का पालन करता है । इससे निरंजन की त्याग वृत्ति दृष्टिगोचर होती है । तथा प्रेम में बलिदान की भावना दिखाई देती है । कुंतल ने जो पत्र निरंजन से लिखे थे, उससे सिर्फ निसर्ग, साहित्य और संगीत की बातें विद्यमान थी । लेकिन जयदेव विश्वास को खोकर अपनी आदर्श पत्नी पर शक करता है । कुंतल जयदेव से पत्र वापिस देने की बात करती है । एक दिन अचानक निरंजन जयदेव के घर आता है, तब कुंतल ने पत्रों की माँग करने पर वह कुंतल को तुरंत उसके भेजे खत लौटा देता है । निरंजन कुंतल को युनिवर्सिटी के संगीत विभाग में अध्यापिका की नौकरी दिलवाता है और जब इसका पता कुंतल को लगता है, तब वह महसूस करती है कि निरंजन ने मुझपर दया दिखाई है । तब वह उस नौकरी को अस्वीकार कर त्यागपत्र दे देती है और अन्य महिला कॉलेज में अध्यापिका के रूप में नौकरी स्वीकार करती है । कुंतल के त्यागपत्र देने पर निरंजन उससे नाराज नहीं होता तो वह उसके चरित्र-बल से अभिभूत होकर उसकी प्रशंसा ही करता है । वह विवाह को एक कर्मकांड, एक परम्परा का पालन नहीं, आत्मनुभूति मानता है । निरंजन स्त्री को मानव-जाति का उत्तम अंश मानता है, क्योंकि वह बलिदान, विनम्रता, श्रध्दा और रूप की प्रतिमा है । इसीलिए तो वह बलिदान, विनम्रता, श्रध्दा और रूप की प्रतिमा है । इसीलिए तो वह बेझिझक कुंतल के कहने पर सुंदरम का हाथ अपने हाथ में ले लेता है । उसे संगीत तथा साहित्य में रुचि है । वह मन-ही मन कुंतल से प्रेम करता है और उसके लिए बड़े-से बड़ा बलिदान करने को तत्पर है । जब एक दिन निरंजन अचानक कुंतल के घर आता है तब हमेशा "आप" कहनेवाली कुंतल निरंजन से

कहती है - "ओ ! तुम आ गये । (सँभलती हुई । आप आ गये ।" [१]
तब वह कहता है तुम "आप" के बदले "तुम" ही कहो । से तात्पर्य है कि निरंजन का कुंतल के प्रति प्रेम अब भी जीवित है । उपर्युक्त उद्दरण से कुंतल की स्त्री सुलभ तथा प्रेम सुलभ भावनाएँ दृष्टि में आती है ।

नाटक के अन्त में जयदेव पूरी तरह से निर्बल होता है । उसका प्रेस बंद हो जाता है । प्रेस कर्मचारी हड़ताल करते हैं । जब जयदेव के बंगले पर जुलूस आता है, तब अपने पति की रक्षा हेतु कुंतल जुलूस में कूद जाती है, वह आहत हो जाती है । तब निरंजन को बहुत दुःख होता है । वह कुंतल को लेकर आता है तथा तुरंत डॉक्टर को ले आने का प्रबंध करता है । वह कुंतल के लिए बडेसे बड़ा बलिदान करने में तत्पर है । निरंजन का चरित्र जयदेव की प्रतिक्रिया में सर्जित है । उसकी बौद्धिकता भावुक युवक की बौद्धिकता है । उसमें सर्जनात्मक जीवन मूल्यों के प्रति अनुराग है । कुंतल इसीलिए उसका आदर्श है और जयदेव काम्र मार्ग उसका मार्ग नहीं है । कुंतल के आदर्शों को निरंजन अपनी आधार भूमि मानता है । कुंतल के आदर्शों का समर्थन करते समय निरंजन कुंतल से कहता है - "हां, रातरानी के पुष्प छोटे हैं, कोमल हैं, तभी वे शाश्वत हैं, क्योंकि सभी इनका वरण कर लेना चाहते हैं ।" [२] निरंजन जानता था रातरानी के फुल छोटे है लेकिन वे अपनी सुगंध से पूरे वातावरण को सुगंधित, हरा-भरा बना देते है । उसी प्रकार कुंतल भी रातरानी का प्रतीक बनके हमारे सामनेआती है । और संसार में स्थित हर एक व्यक्ति उसकी बनाई राह पर चलना पसंद करेगा । निरंजन तो आदर्श का पुतला है । निरंजन के व्यक्तित्व में आदर्श, संगीत तथा साहित्य प्रेमी, नारी को वात्सल्य तथा न्याय की मूर्ति

- -

१) डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल - रातरानी, पृष्ठ - ७८.
२) वही पृष्ठ - ७९.

माननेवाला, बलिदान की तथा त्याग की भावना, कर्मकांड का विरोध करना आदि गुण समाहित है । वह एक आदर्शवादी व्यक्तित्व है ।

३.३.२ सुंदरम् -

सुंदरम प्रस्तुत नाटक का गौण पात्र है । उसकी अवस्था कुंतल के बराबर ही है । नाम के अनुकूल उसका रूप-रंग है । वह भीतर से उन्मुक्त और सुहृदय है । उसकी आयु लगभग २८ साल की है । सुंदरम का वास्तविक नाम कुलवंतीदेवी श्रीवास्तव है । वह कुंतल की सखी है । जब कुंतल, सुंदरम तथा अन्य सखियाँ कॉलिज में पढ़ रही थी तब सब सखियों ने तथा कुंतल ने मिलकर कुलवंती देवी का नाम उसकी सुंदरता के अनुसार सुंदरम रखा है । हिन्दुस्थान में दाक्षिणात्य संगीत को अग्रणी माना जाता है । और सुंदरम तो दाक्षिणात्य संगीत का अविष्कार है । सुंदरम दिल्ली रेडिओ पर प्रोग्राम एक्झिक्यूटिव के रूप में कार्यरत है । वह एक तितली की भाँति कोमल प्रतीत होती है । तथा हास्यप्रिय तथा उन्मुक्तता उसकी चारित्रिक विशेषताओं का अभिन्न अंग है । उसके हास्यप्रिय होने का सबूत निम्न प्रकार के प्रसंग से दृष्टव्य है कि - वह अपनी सखी कुंतल से आपबीती प्रकट करते हुए कहती है । "सुनो सुनो एक मजेदार बात .। मैं दिल्ली में जिस फ्लॅट में रहती थी, सामने एक सज्जन रहते थे - अविवाहित, नौजवान, एकाउंट आफिसर । संयोग से मेरी ही जात-बिरादरी के । अहा-हा .। कुछ गरीब से उन्हें प्रेमी - रूपी गलत-फहमी का इफ्लुएंजा हो गया । मैंने की अपना टेम्प्रेचर थोडासा बढ़ा लिया । एक दिन मेरठ में मेरा भाई आया - वही विजय अब कैप्टन हो गया है । दिनभर भाई के साथ हँसती खेलती रही और रात को हम "सेकण्ड शो" सिनेमा देखकर लौटे । प्रेमी साहब तब तक जागते और खिड़की खोलें हमें देखते रहें । चार बजे विजय मेरठ चला गया । मैं अकेली साढ़े आठ बजे तक सोती रही ।

प्रेमी साहब समझो... ।" [१] आगे उनकी क्या प्रतिक्रिया रही उसका विवरण वह स-अभिनय कुंतल को बता देती है । दोनों लोट पोट होने तक हँसती हैं । आगे चलकर सुंदरम कुंतल के घर आकर मरे हुए इंजीनियर साहब की आत्मा का रूप धारण करती है और जयदेव के दोस्त योगी और प्रकाश को बेवकूफ बनाती है । इस्से उसका हँसी प्रेमी रूप नजर आता है । वह एक निर्मल, तितली की भाँति सरल है । इस बात को स्पष्ट करते हुए कुंतल निरंजन से कहती है - "सुन्दरम जय को फुलवारी में घुमा रही है । ऐसी निर्मल सुन्दर लड़की मैंने और कहीं नहीं देखी । तितली की तरह सरल, शिशु जैसी नटखट ।" [२] वह हर-एक के मन में अपने लिए जगह बना लेती है । उसकी सुंदरता भी लाजवाब है । इसीलिए तो जयदेव के दोस्त योगी और प्रकाश उसपर हानी हो जाते है । और तो और जयदेव भी उसे मन ही मन चाहता है । निरंजन तो उससे शादी ही करता है ।

सुन्दरम नारी जागरण का द्योतक बनकर प्रस्तुत नाटक में उभर आयी है । इसीलिए तो नाटककार ने सुन्दरम की सृष्टि कुंतल का प्रतिपक्ष प्रदर्शित करने के लिए की है । वह इसीलिए तो पुरुष समाज को प्रखर शब्दों में चुनौती देती है, और नारी जागरण का आह्वान करती है - "पढ़ी-लिखी लड़कियों का यह सारा विवाह का चक्कर बड़ा ही अपमानजनक है । पति के माने इज्जत-मर्यादा नहीं, जो विवाह के बाद कन्या को वर से मिलती है । बल्कि पति के अर्थ होते हैं मालिक, मालिक माने खुदा नहीं, मालिक माने गुलामवाला मालिक ? ..... मेरी समझ में तो इसका एक ही कारण है -

---

१) डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल - रातरानी, पृष्ठ-३२.

२) वहीं, पृष्ठ-७८.

पिछले करीब एक हजार वर्षों से हमारे समाज का मन सिर्फ मालिक और गुलाम ही देखता आया है । वही एक मर्यादा, वही एक सम्बन्ध ।"[1]

कुंतल निरंजन से सुन्दरम की शादी करा देती है । निरंजन से विवाह होनेपर वह पति परमेश्वर मानती है । उसकी इच्छा के अनुसार वह रेडियो पर प्रोग्राम एक्जिक्यूटिव की अच्छी-भली नौकरी छोड़कर प्रसन्नतापूर्वक अपना घर सँभाल लेती है । इस पात्र की सृष्टि भी लेखक ने सम्भवत: कुन्तल का प्रतिपक्ष प्रदर्शित करने के लिए ही की है ।

3.3.3 <u>माली</u> -

माली आलोच्य नाटक का गौन पात्र है । उसकी आयु साधारणत: ५० वर्ष की है । उसका रंग सावला और कद मझोला है । हमेशा वह दुनी बनियान सिरपर अंगोछा बाँधा, मालिक के सामने झुककर खड़ा रहता है । वास्तव में इंजीनिअर साहब तथा कुंतल उसे अपने परिवार का सदस्य मानते है । उसे भी अपने मालिक के प्रति अपार स्नेह है । एक दिन माली बाबा ने इंजीनियर साहब की जान बचायी थी, तब से वे उसे अपने घर का एक सदस्य ब ले आये थे । मालिक इंजीनियर साहब का देहान्त होने पर माली जयदेव के घर की हर एक समस्या को अपनी समस्या समझकर काम करता है । उसे फुलवारी का काम करना अच्छा लगता है । वह इस काम को भगवान की पूजा मानता है । जब कुंतल माली बाबा से कहती है बाबा तुम कितना काम करते हो तब वह कहता है - "मेरा काम कठिन है ! नहीं मां, मेरा काम सबसे सरल है । फुलवारी का काम मेरे लिये पूजा है, मां ! .... हां, मां ! और वही कर्म भगवान की पूजा है ! यही तो मेरे गुरु महाराज का शब्द है !" [2]

---

१) डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल - रातरानी, पृष्ठ-३७.

२) वहीं, पृष्ठ-५१.

माली के गुरु कबीर है । उसकी दृष्टि विशाल है, उसके बोलने में आदर दिखायी देता है । माली जब आठ साल का था तभी गुरुमुख हो गया था । फिर माता-पिता का स्वर्गवास हो जाता है और उसके मनुआ ने बनवास ले लिया । तब से वह साधु मंडली की होली में ही हरी भजन करते हुए भटकता रहता था । संयोग के अनुसार वह इंजीनियर साहब के घर पहुँच जाता है । माली के चरित्र में सेवा-भाव, स्नेह और आत्मीयता भरपूर मात्रा में मिलती है । जयदेव द्वारा फसल को कुंजडे के हाथ बेच दिए जाने पर उसे अत्यन्त दु ख होता है । इसे वह अपने मालिक के बाग को बेइज्जती समझता है । वह भावुक स्वभाव का है । उसे लगता है बाग में स्थित पेड़ पौधे भी अपमानित हो जाते है । और यदि ऐसा हुआ तो अगले साल निश्चित ही फसल कम आयेगी ।

अन्तिम दृश्य में जयदेव को घर पर छोड़कर वह स्वयं निरंजन के साथ कुंतल की रक्षा के लिए जाता है । इस चरित्र की सृष्टि नाटककार ने मूलत: विभिन्न स्थितियों और पात्रों पर टिप्पणी और व्याख्या करने के लिए की है ।

३.३.४ योगी और
३.३.५ प्रकाश -

योगी और प्रकाश जयदेव के दोस्त है । दोनों शिक्षित तथा अच्छी नोकरी पर होने के बावजूद भी उनके चरित्र में घिन आती है । दोनों जुआरी, कायर और कामुक के रूप में नाटक में प्रस्तुत होते हैं । वे अपने छल से जयदेव के पास स्थित पिता प्रदत्त ७५ हजार रुपये की पूँजी जुएँ में जीत लेते हैं । दोनों दोस्ती के नाम पर कलंक है । ऐसे कायर तथा मूर्ख लोगों को एक दिन हँसी-मजाक में सुंदरम उल्लू बनाती है, तब से वे दोनों उससे अपमान का बदला चुकाना

चाहते हैं । वे जयदेव के पास अपनी चाहत प्रकट करते हैं कि सुन्दरम से हमारा परिचय करवा दें । ताकि ये नाजायस फायदा उठा सकें । लेकिन जयदेव उनकी नैतिकता को अच्छी तरह से जानता था । वह उन्हें गालियाँ देता है । अन्त में तीनों के बीच ताश को लेकर हातापायी होती है । योगी और प्रकाश के मन में गंदे-गंदे विचार आते हैं । योगी वर्क्स के खिलाफ जयदेव को भडकाता है और अपनी अमानवीय नीति को जाहिर करते हुए कहता है - "भई, चाहे जो बात हो, अपनी तो राय यह कि प्रेस वर्क्स का जुलूस जब हजरतगंज के चौराहे से पुराने कॉफी हाउस की ओर बढ़े, तो दो गुंडे लगाकर पुलिस पर पत्थर फिकला दो - फिर पुलिस वाले खुद उन जुलूसवालों का दिमाग ठीक कर देंगे । फायरिंग नहीं तो लाठी-चार्ज जरुर ।"[१] इसप्रकार योगी और प्रकाश का चरित्र छल, अमानवीयता कामुकता, जुआरी, कायर आदि दुर्गुनों से युक्त है ।

उपर्युक्त प्रमुख तथा गौण पात्रों के अलावा प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप में कुछ अन्य पात्र भी आएँ हैं जो नाटक को गतिशील करने तथा प्रमुख पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं को प्रकट करने का कार्य करते हैं । अन्य पात्रो में निम्नलिखित चरित्रों को रखा जा सकता हैं --

<u>मालिक इंजीनियर साहब</u> -

नाटक के आरंभ में लेखक ने विवरण दिया है । रंचमंचपर स्थित कमरे के एक दिवार पर मालिक इंजीनियर साहब का चित्र टंगा हुआ है । इससे जाहिर है कि वे सामने स्थित कमरे के मालिक है जो अब नहीं रहें । जयदेव

- -

१) डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल - रातरानी, पृष्ठ - ११५.

उनका इकलौता बेटा है । वे अपने बेटे के नाम ७५ हजार रुपये बैंक बैलेंस और एक प्रेस जिसमें सौ आदमी काम करते हैं, छोडकर चले गए हैं । उससे पहले वे अपने बेटे की शादी नन्दनवन की इंद्रायणी समान सुशील, सुसंस्कृत, संगीत विशारद लड़की कुंतल से करवाते है । वे माली बाबा को अपने घर ले आते हैं, तथा उसे अपने परिवार का एक सदस्य बना लेते है । एक दिन माली इंजीनियर साहब की यादों को दोहराते हुए कुंतल से कहता है - "साधू, तुम मेरे बगीचे के माली ही नहीं, इस पूरे घर के मालिक हो" धन्य थे वे ! बहुत बड़ी आत्मा थी उनकी । कहाँ वे ब्राह्मण, कहाँ मैं रैदास ! मां ! मालिक कहा करते थे - मानुष ईश्वर की लिखी हुई एक पाती - हमें पाती का मजमून देखना चाहिए, उसकी जात-पांत रूप रंग देखने से क्या ! मालिक मेरे असली गुरु थे, मां !" [१] उपर्युक्त वक्तव्य से स्पष्ट होता है कि इंजीनियर साहब जात-पात को नहीं मानते थे । डॉ. लक्ष्मीनारायण लालजी ने उनके चरित्र के माध्यम से वर्गहीन समाज की प्रतिष्ठा करने का प्रयास किया है । इंजीनिर साहब प्रस्तुत नाटक में अप्रत्यक्ष रूप में होते हुए भी पूरे नाटक का कथानक उनके इर्द गिर्द मँडराता है ।

प्रिंसिपल पं. रामचंद्र शुक्ल -

शुक्लजी कुंतल के पिताजी है । उन्होंने अपने जीवन में शिक्षा क्षेत्र में बहुत सारा यश तथा नाम कमाया । अपनी बेटी को होनहार बनाया । जब कुंतल की शादी निरंजय से तय होती है, तब वे बहुत खुश होते है । लेकिन वकिल साहब ने दहेज के रूप में ३०००/- रु. नगद माँगने पर वे पूरी तरह से टूट जाते हैं । उनके लड़की की शादी टूट जाती है । शुक्लजी आर्थिक

---

१) डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल - रातरानी, पृष्ठ - ५०.

आर्थिक परिस्थिति के आगे विवश हो जाते हैं । और अपनी बेटी की शादी का सपना अधूरा छोड़कर इस जहान को छोडकर हमेशा हमेशा के लिए चले जाते हैं । उनके माध्यम से वधू पक्ष को समस्याओं को उजागर किया है ।

किशोरी -

प्रेस में काम करनेवाला मजदूरों का प्रमुख है । उसे नौकरी से निकाल दिया जाता है । उसके बीवी और बच्चे दाने-दाने के लिए मोहताज हो जाते हैं । किशोरी शोषित वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है ।

उपर्युक्त इन अन्य पात्रों के अलावा प्रस्तुत नाटक में डिप्टी मामा, वकील साहब, लेडी वार्डन मिसेजसिंह, कॅप्टन, विजय, सिपाही लाल, अकाउंट ऑफिसर, पहला, दूसरा, तिसरा आदमी आदि पात्र प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप में आएँ हैं ।

३.३.६ निष्कर्ष -

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल कृत "रातरानी" नाटक में लेखक ने लगभग १५ मुख्य तथा गौन और अन्य पात्रों का चयन किया है। इन पात्रों में से दो प्रमुख पात्र हैं । तथा ५ गौन पात्र है और अन्य पात्र गौण पात्रों की कोटी में आते हैं ।

नाटक में पात्रों का चयन सामाजिक, पारिवारिक पृष्ठभूमि की कसौटी पर किया है । लेखक ने पात्रों की विशेषताओं के माध्यम से अपने उद्देश्य की पूर्ति करने का प्रयास किया है ।

आलोच्य नाटक नायिका प्रधान है । नायिका कुंतल एक आदर्श भारतीय नारी का प्रतिनिधित्व करती है । उसकी चारित्रिक विशेषताओं में उसका संगीत प्रेम, साहित्य और निसर्ग प्रेम, समझदार वृत्ति, त्याग की भावना आत्मसम्मान की भावना, कर्मचारियों के प्रति सहानुभूति आदि बातें स्पष्ट होती हैं ।

जयदेव प्रमुख पात्र है । वह नायिका का पति होने के कारण नायक के रूप में उभर आया है लेकिन उसमें बहुत सारे अवगुण विद्यमान हैं । जैसे - अर्थ को सर्वस्व माननेवाला, दोहरा व्यक्तित्व, शकी, जुआरी तथा ऐशोआरामी, स्त्री-लोलुप, आदि । वह पूँजीपतिवर्ग का प्रतिनिधित्व करता है । नाटक के अन्त में उसका हृदय परिवर्तन होता है, उसका व्यक्तित्व उत्थान की ओर अग्रेसर हो जाता है ।

गौन पात्रों में निरंजन, सुंदरम, माली योगी और प्रकाश के माध्यम से विविधरूपी व्यक्तित्व का अंकन किया है । जिससे कथानक के विकास में मदद हुआ है ।

डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल को पात्र तथा चरित्र-विश्लेषण में काफी सफलता मिली है । हर एक पात्र अपनी-अपनी भूमिका निभाता हैं तथा अपने वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है । अत: हम कह सकते हैं कि डॉ. लाल कृत "रातरानी" नाटक पात्र तथा चरित्र-चित्रण की दृष्टि से सफल बन पड़ा है ।

.....